



फेमस होने का ऐसा चक्र कि
यू-ट्यूब पर नवजात के
उत्तीर्ण के तरीके ही बता डाले
अब पुलिस कर रही तलाश
गाजियाबाद, 13 जून (एजेंसियां)।

एक यू-ट्यूब पर योग्य से जुड़ा चैनल चलाने वाली युवती ने खुद को चर्चा में लाने के लिए स्ट्रीमिंग के दौरान नवजात के उत्तीर्ण के तरीके ही बता डाले। यामले में सोशल मीडिया पर हुई शिकायत के बाद गाजियाबाद पुलिस से किसी ने शिकायत की। इसके बाद कौशिंबी थाने में कुंवारी बेगम नाम के एक यू-ट्यूब चैनल को चलाने वाली युवती पर केस दर्ज किया गया है। अंडिशनल सीपी दिनेश पी ने बताया कि इस मामले में दीपिका नारायण भाटाजा की शिकायत पर केस दर्ज किया गया है।



यूपीए सरकार में क्यों नहीं की स्पेशल स्टेट्स की मांग

गृह मंत्रालय के लिए अड़े थे लालू यादव'- जेडीयू का बड़ा हमला

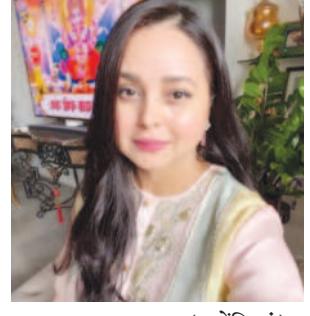
जेडीयू का लालू यादव पर हमला

जेडीयू प्रदेश प्रवक्ता हिमराज ने कहा कि आरजेडी अध्यक्ष लालू यादव यूपीए सरकार में गृहमंत्री बनना चाहते थे। जेडीयू के नेताओं ने दावा किया है कि उस समय लालू यादव के पास 24 सांसद थे संचाल बल मजबूत थी उसके बावजूद लालू यादव स्पेशल स्टेट्स को मांग करने के बजाय गृह मंत्रालय के दर्जे की मांग की गई ना अड़े हुए थे, हालौट कि यहुं मंत्रालय भी मिला और रेल मंत्री बनाया गया। जिसको आड़े में वो अपने नावालिंग बच्चों के लिए धन अर्जित कर रहे थे। उन्हें विहार के विकास की चिंता नहीं थी, सिफर अपने परिवार के विकास की चिंता थी।

आरजेडी मजबूत स्थिति में थी, तब लालू प्रसाद यादव ने कभी विहार के विकास की बात क्यों नहीं की। केंद्र से विशेष राज्य और जातिनां जग्याणना की बात क्यों नहीं उठाई थी।

चुनाव हारने के 7 दिन बाद ही सिंगापुर चली गई रोहिणी आचार्य

बताया आरिकर क्यों जा रही है बिहार छोड़कर



नीतीश को लेकर क्या बोलीं रोहिणी?

नीतीश जी को अपने साथ कब ला रहे हैं, इस सचाव के जबाब में लालू की बेटी ने कहा, हम उन्हें बतों लेकर आएंगे। वो बड़े हैं, हम उनसे आशीर्वाद ले रहे हैं। अब वो कब आएंगे, ये तो वही बताएंगे। हम लोग तो उनके बालू-बच्चे हैं, उनसे आशीर्वाद मांग रहे हैं। इन्हाँ ही नहीं आधि प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के शपथग्रहण में नीतीश के नहीं जाने को लेकर जब रोहिणी से पूछा गया तो उन्होंने कहा, तबवित खराब होगा उनका, उन्हें आराम

किया जाए।

सारण, 13 जून (एजेंसियां)। विहार की सारण सीट से चुनाव हासने के बाद आरजेडी सुरीयों लालू यादव की छोटी बेटी रोहिणी आचार्य सिंगापुर के लिए रवाना हो गई है। हालांकि उन्होंने बताया है कि वो 10-15 दिनों में

सिंगापुर से वापस आ जाएंगी और

सारण की जनता को लेकर आरजेडी सुरीयों

के लिए भी बताएंगी।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के लिए सिंगापुर जा रही है। उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की जनता की सेवा के लिए। अपने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देने के लिए। मोदी सरकार में विहार को

बड़े मंत्रालय नहीं मिलने पर

कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने बच्चों से मिलने के

लिए सिंगापुर जा रही है।

उन्होंने कहा कि हम 10-15 दिन में वापस आ जाएंगे सारण की

जनता की सेवा के लिए।

किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वो अपने ब

एनटीए के साथ पर सवाल

चिकित्सा विज्ञान के स्नातक पाठ्यक्रम के लिए आयोजित राष्ट्रीय प्रत्रता और प्रवेश परीक्षा यानी नीट में धांधली के आरोपों को सर्वोच्च न्यायालय ने गंभीरता से लेते हुए गुरुवार को सुनवाई की। केंद्र की ओर से प्रस्ताव रखा गया कि ग्रेस मार्क्स पाने वाले 1563 कैंडिडेट के स्कोरकार्ड निरस्त होंगे। इसके बाद बिना ग्रेस मार्क्स के स्कोर कार्ड जारी किए जाएंगे। एनटीए के एडवोकेट ने कहा इन कैंडिडेट्स के लिए 23 जून को दोबारा परीक्षा कराई जाएगी। 30 जून से पहले रिजल्ट जारी किया जाएगा ताकि जुलाई में शुरू होने वाली काउंसिलिंग प्रभावित न हो और सभी बच्चों की काउंसिलिंग पहले से तय तारीख 6 जुलाई से एकसाथ हो सके। बता दें कि इस बार की नीट परीक्षा के नतीजों में कई तरह की विसंगतियां देखी गई हैं। जब परीक्षा ली गई, तब विहार और राजस्थान के कुछ केंद्रों पर गलत पर्चे बांट दिए गए थे। बाद में उन्हें दुरुस्त करने का दावा किया जा रहा है। तब विद्यार्थियों ने आरोप लगाया था कि पर्चा लीक हुआ है, परीक्षा रद्द कर दुबारा कराई जाए। लेकिन एनटीए ने छात्रों की एक न सुनी। उसका कहना है कि तकनीकी गड़बड़ी की वजह से गलत पर्चा बन गया था। फिर नतीजे तय तिथि से दस दिन पहले ही घोषित कर दिए जाने पर भी छात्रों ने एतराज जताया था। नतीजों में सड़सठ विद्यार्थियों को पूरे सात सौ बीस अंक मिले हैं। इस तरह का रिजल्ट पहली बार आया है। एनटीए का कहना है कि जिन विद्यार्थियों को देर से पर्चे मिले, उन्हें समय की हानि होने के चलते कृपांक दिए गए। उसका क्या आधार है, इसे स्पष्ट नहीं किया गया। एनटीए अब भी अपनी बात पर कायम है कि पर्चा लीक का सवाल ही नहीं पैदा होता है। न ही गलत तरीके से किसी विद्यार्थी को अंक दिए गए हैं। परीक्षा में पूरी तरह पारदर्शिता बरती गई है। लेकिन उसका यह तर्क सर्वोच्च न्यायालय के समने ज्यादा देर तक टिक नहीं सका। केंद्र ने तर्क दिया है कि ने दोबारा 1563 विद्यार्थियों की परीक्षा होगी। एनटीए ने कृपांक की शिकायतों के समाधान के लिए एक जांच समिति गठित कर दी है, लेकिन उस पर विद्यार्थियों को भरोसा नहीं है। चिकित्सा पाठ्यक्रमों के दाखिले में

धांधली की शिकायतें पुरानी हैं। उन शिकायतों को दूर करने के मकसद से ही एनटीए के माध्यम से प्रवेश परीक्षा कराने का निर्णय किया गया था। एनटीए की बनाई गई व्यवस्था के तहत नीट की परीक्षा के प्रश्नपत्र देश के सभी केंद्रों पर एक साथ विद्यार्थियों को मिलते हैं। उनमें किसी तरह की गडबड़ी की गुंजाइश न होने का दावा किया जाता है। फिर भी, जिस तरह एनटीए की दूसरी परीक्षाओं में पच्चे बाहर निकल गए और कई परीक्षाएं रद्द करनी पड़ीं, उससे नीट परीक्षा को लेकर भी आशंका गहरी होती जा रही है। एनटीए को बहुत भरोसेमंद और चाक-चौबंद संस्था माना जाता है, अगर उसकी परीक्षाओं में भी धांधली के आरोप लग रहे हैं, तो स्वाभाविक ही इससे उसकी साख पर सवाल उठते हैं। पिछले कुछ वर्षों में प्रतियोगी और प्रवेश परीक्षाओं के पच्चे लीक होने की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। न केवल छोटे सरकारी पदों के लिए, बल्कि राज्यों के लोकसेवा आयोगों की परीक्षाओं के भी पच्चे बाहर होने की घटनाएं हो चुकी हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड में अनेक प्रतियोगी परीक्षाएं इसीलिए रद्द करनी पड़ीं कि उनके पच्चे परीक्षा से पहले ही बाहर निकल चुके थे। इस तरह से हो रहे पच्चे लीक को लेकर पहले उत्तराखण्ड सरकार ने कडे कानून बनाए, फिर केंद्र सरकार ने भी कानून बनाने की घोषणा की। नकल माफिया पर नकेल कसने के लिए हर सरकार कमर कसती तो दिखती है, लेकिन नकल कराने वालों के हैसले पस्त करते नजर नहीं आते। परीक्षाएं रद्द होने से बहुत सारे विद्यार्थियों की मेहनत पर जहां पानी पिरता है वहीं उनका मनोबल भी टूटता है। समय और पैसे की बर्बादी अलग से होती है। इस हताशा में कई विद्यार्थी खुदकुशी तक का रास्ता अखिलायर करते देखे जाते हैं। अब वक्त आ गया है कि सरकारें इस मामले में दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाए अन्यथा इस तरह की गडबड़ीयों का सिलसिला चलता ही रहेगा।

तमाशा आज का

आस-पास की भीड़ को देख जमूरे ने सोचा चलो, मौका आ गया, मदारी को खीचने का और वह शुरू हो गया। साहेबान, मेहरबान,

अच्छा मदारी! अब ये बता ये बाबू जो चुप खड़े हैं, क्या सोच रहे हैं? सोच रहे हैं, काश मैं उस मोटू नेता की जगह होता तो क्यों इस रह बीच बाजार तमाशा देखता? सीधे संसद में या विधान सभा की गाली गलौज जूतमपैजार वाला तमाशा न देखता? मदारी----- हां उस्ताद! यह बता अब की हवा किधर कैसी बहेगी कितने कुर्सी के लिए तरसेंगे? रहा तू जमूरे का जमूरा ही उस्ताद! मुझे तुम ने मौसम विभाग समझ लिया कि सौ प्रतिशत सही जानकारी दूंगा फिर भी इस वर्ष भर देश के कछु भी रक्त के अभाव में आज भी दुनिया साल करोड़ों लोग असमय ही काल वंजाते हैं। जीवनदायी रक्त की महता लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए करने के उद्देश्य से 14 जून 1868 काल लैंडस्टीनर के जन्मदिवस पर 2004 को रक्तदाता दिवस की शुरू गई थी और तब पहली बार विश्व संगठन, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ तथा रेड क्रिसेंट सोसायटीज द्वारा 'दिवस' मनाया गया था, तभी से 'रक्तदान' के नाम कर दिया गया। इस दिवस 'दान का जश्न मनाने के धन्यवाद रक्तदाता!' थीम के साथ रहा है। विश्व रक्तदाता दिवस की शुरू उद्देश्य यही था कि चूंकि दुनियाभर लोग समय पर रक्त न मिल पाने के के मुंह में समा जाते हैं, अतः लोगों वाले करने के लिए जागरूक किया जाए।

रह बेसिसरपैर की बातें सिर्फ मुझे है कहना। इस अक्सरिक पद परिवर्तन से जनता तो भौचक थी ही - मदारी भी कम ताज्जुब में नहीं था। वह मंजूर है! चिल्लाया। किसी अज्ञानी नेता द्वारा ज्ञानाव्याप्ति प्रस्तुत करने पर अल्प शिक्षित जनता की तरह लोगों ने तालियां बजायी। जमूरे ने मदारी से पूछा - जो पूछँगा बताओगे----? माथा जोड़कर! लेकिन दो चीजों को छोड़कर!! वो क्या? देश की राजनीति और चीजों के दाम ऐसा क्यों? राजनीति में कब क्या हो जाय! कौन राजाभोज कौन गंगवा तेली हो जाए, मैं क्या, तेरा विधाता भी नहीं जानता उस्ताद! उसी तरह कौन सी चीज कब आसमान को छू ले---- मैं तो नहीं बता सकता। पेट्रोल और डीजल के भावों में आ चुकी समानता और टमाटरों और बाकी चीजों के दाम क्या साम्यवाद के भारत में आगमन की निशानी है? मदारी! तू तो जमूरे से बड़ा जमूरा है हां उस्ताद! मैं तो हूं ही लेकिन तू उल्लू पूरा है राज्यों के नेता पैसों की विर्ग करँगे, वोटों की फसल खूब होगी, क्योंकि नई पौध चुनावी आशिक की महबूब होगी। मदारी तक ही सीमित रहना उस्ताद! वरना तुझ अकेले को पड़ जाएगा माथा फोड़ना! भई जमूरा उस्ताद! मैं भूतपूर्व शोध छात्र रह चुका हूं। तो यह तमाशा क्यों करता है? मदारी एक तो यह है कि जिनके निर्देशन मैं शोध कर रहा था, मेरे शोध ग्रंथ पर उस निर्देशक की बेटी का दिल आ गया। अब वह डॉक्टर बन गई मैं यहां तेरे पास हूं। दूसरी बात तो जानता ही है ... बेरोजगार पेट! तू ने मदारी--- वातावरण में रस घीला है, सच कहूं सच ही बोला है। अच्छा बोल तू दंगों में रुचि रखता है? रुजमूरा उस्ताद! हम भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और धर्मनिरपेक्षता का क्या भजिया बनायेंगे, जो चंद सो कॉल्ड फिल्में देखकर लड़ जायेंगे। धर्म निरपेक्षता और धार्मिक उन्माद जमी है लेकिन तेरे अंदर एक कमी है।



मनोज कुमार अग्रवाल

ईमानदारी कर्तव्यनि

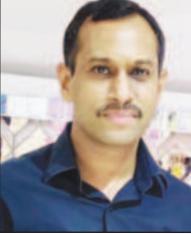
दागा ह ता क्या हुआ?
जनता ने चुना है!
मनोज कुमार अग्रवाल
अठारहवीं लोकसभा में
कुल 251 माननीय
भारतीय दंड संहिता की
विभिन्न धाराओं के तहत
अपराध के लिए आरोपित
हैं गौर तलब बात यह है
कि जिस तरह समाज में
दिनोंदिन नैतिकता
छा परोपकार करुणा दया

आपराधक रकाड़ रखत ह। यह स्थात हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम मूल्यों की शुचिता का पारदर्शी समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? इसी दिशा में चिंतन से सिर्फ चिंता ही बढ़ती है। चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स यानी ए.डी.आर. की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2109 में चुने गये संसदों में जहां 233 बानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध

मामला वाल सदस्या का संख्या 2009 से 124 फीसद बढ़ गई है। इस बार चार उम्मीदवारों ने भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 302 के तहत अपने ऊपर हत्या से संबंधित मामले दर्ज होने की जानकारी दी है और 27 ने आईपीसी की धारा 307 के तहत हत्या के प्रयास से संबंधित मामले दर्ज होने की घोषणा की है।

अपराध के लाए आरापया का चुन कर ससद भज रही है और सभी राजनीतिक दलों द्वारा अपराधी दबंग छवि वाले प्रत्याशियों को टिकट दिया जा रहा है तो कैसे संसद में दागियों के पहुंचने का द्वार बंद हो। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की सजग पहल के बाद ही वर्ष 2020 में निर्देश दिए गए थे कि सभी राजनीतिक दल लोकसभा व विधानसभा के उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड को प्रकाशित करें। जाहिरा तौर पर इस आदेश का मकसद देश की राजनीति को आपराधिक छवि वाले नेताओं से मुक्त करना ही था। लेकिन वास्तव में ऐसा हुआ नहीं क्योंकि तमाम राजनीतिक दलों की प्राथमिकता जीतने वाले उम्मीदवार थे, अब चाहे उनका आपराधिक रिकॉर्ड ही क्यों न हो। ऐसा भी नहीं है कि दल विशेष ने ही अपराधी उम्मीदवारों को टिकट दिए हों। हर छोटे-बड़े राजनीतिक गियों की पर्याप्त संख्या रही है। जो राजनीतिक दलों की करनी के भारी अंतर को ही उजागर करता है। आखिर युवा व बच्चे अपने लोकतंत्र के प्रतिनिधियों के अनुकरण करेंगे? सवाल है कि देश के लिये नीति वाले ऐसे दागी लोग हमारे भाग्यविधाता बने रहेंगे तो देश का भविष्य कैसा होगा? क्या आपराधिक पृष्ठभूमि वाले जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद हमारी कानून-व्यवस्था को नहीं करेंगे? क्या होगा हमारे समाज व व्यवस्था का? क्यों तमाम आदशों की बात करने वाले और दूसरे दलों के नेताओं की कारगुजारियों पर सवाल उठाने वाले नेता राजनीति को अपराधियों के वर्चस्व से मुक्त कराने की ईमानदार पहल नहीं करते? क्यों सभी राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र में शुचिता के लिये सहमति नहीं बनाते? निश्चित रूप से यदि समय रहते इस दिशा में कोई गंभीर पहल नहीं होती तो आने वाले वर्षों में दागियों का यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जाएगा। इसके साथ ही बड़ा संकट यह भी है कि देश के निचले सदन में येन-केन-प्रकारेण करोडपति बने नेताओं का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है।

समझना होगा रक्तदान का महत्व



योगेश कुमार गोयल

रक्तदान को पूरी तरिया में प्राप्त करना रक्तदान के महत्व को लेकर किए जाते रहे प्राचीन सामाजिक वाक्यों में वर्णन किए गए हैं।

जावन बचाता है बल्कि जिंदगी बचाकर उस परिवार के जीवन में खुशियों के द्वेरा रंग भी भरता है। कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति रक्त के अभाव में जिंदगी और मौत की लड़ाई लड़ रहा है और आप एकाएक उम्मीद की किरण बनकर सामने आते हैं और आपके द्वारा किए गए रक्तदान से उसकी जिंदगी बच जाती है तो आपको कितनी खुशी होगी। हालांकि एक समय था, जब चिकित्सा विज्ञान इतना विकसित नहीं था और किसी को पता ही नहीं था कि किसी दूसरे व्यक्ति का रक्त चढ़ाकर किसी मरीज का जीवन बचाया जा सकता है। उस समय रक्त के अभाव सकता है या एचआईवा जसा बामारा हा सकता है। इस तरह की भ्रांतियों को लेकर लोगों को जागरूक करने के प्रयास किए जाते रहे हैं किन्तु अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। रक्तदान करने से शरीर को किसी भी तरह का कोई नुकसान नहीं होता बल्कि रक्तदान से तो शरीर को कई फायदे ही होते हैं। जहां तक रक्तदान से संक्रमण की बात है तो सभी स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा रक्त लेते समय विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा तय मानक तरीके अपनाए जाते हैं, इसलिए संक्रमण का कोई खतरा नहीं होता। 18 साल से अधिक उम्र का शारीरिक रूप से स्वस्थ कम से कम 45 किलो से अधिक वजन का कोई भी निदाननुसार एक बार म किसा भा व्याकृत का एक यूनिट अर्थात् 450 मिलीलीटर से अधिक रक्त नहीं लिया जा सकता और इस रक्त की पर्ति हमारा शरीर खुद ही 2-3 दिनों में ही कर लेता है। रक्तदान के बाद प्राप्त रक्त से आवश्यकतानुसार लाल रक्त कणिकाएं, प्लेटलेट्स, प्लाज्मा और क्रायोप्रेसिपिटेट अलग कर मरीजों के लिए उपयोग किए जाते हैं। आरबीसी का उपयोग रक्त लिए जाने के 42 दिन बाद तक किया जा सकता है जबकि प्लेटलेट्स केवल 5 दिन के अंदर उपयोग की जा सकती है।

रक्तदान करते समय कछ महत्वपूर्ण बातों का

राजनीति के दरवाजे



सरेश मिश्रा

राजनीति में शामिल लोग आजकल खेला करने में लगे हैं। खेला करने के लिए उसके भावात्मक पहलुओं का मास्टर होना जरूरी होता है। जिन्हें खेलने का ज्ञान है, वे किसी भी क्षेत्र में स्कोर करते हैं। हाल के वर्षों में, ट्रेंड-सेटिंग करने वाला खिलाड़ियों चलन जोर-शोर से चल रहा है। पहले पहल, यह मज़ा सा लगता है, लेकिन बाद में यह कलश में बदल जाता है। खिलाड़ियों को मजे करने की ऐसी लत पड़ खेल रहे होते ही दिखाई देते हैं, लेकिन स्कोरकार्ड वे नींव और सिरके से पहले दूध को बिगाड़ते हैं, य अपने घर ले जाते हैं। किसी और के बिगाड़े हुए पनीर का दर्जा मिल जाता है। गय दिखाने और खेल शतरंज से भी ऊपर का है। उनके लिए बकरे ने जैसा है। राजनीति में चिंता व्यापक है। रुकरे खुशियां मनाएगी। राजनीति में शामिल लोगों ने गोटी-बड़ी सभी प्रकार की दीवारों को लांघ लिया है खेल का होता है। संविधान होता ही है दीवारें उन उन्होंने दीवारें गिराने का काम नहीं किया। उन्हें नक संभावना अधिक दिखाई देती है। इसलिए जम हाथ में ले लिया है। दरवाजों में खोलने और गो राजनीति के लिए बहुत जरूरी है। नगर-नगर कल राजनीति की धूम है। घोषणा-पत्र में छोटे से के दरवाजों का वादा किया जाता है। दरवाजे हवा। इसलिए दरवाजों के लिए नई दीवारों की जरूरत दरवाजों की उम्मीद में रहते हैं और और इधर थीरे-थीरे वक्त आया जब दीवारों को प्राथमिक गाने लगा। जहां दीवारें नहीं थीं, वहां लोग दीवार दरवाजे हैं, तो विकास है, अगर दरवाजे हैं, तो लोक दरवाजे हैं, तो सुरक्षा और सुविधा हैं। कुछ लोग इसे गेम के रूप में भी देखते हैं। लोग अपनी अपनी गर्व महसूस करने लगे, इसलिए इसे उच्चकोटि नता कहा गया। दरवाजे ने उन्हें अवसर दिया कि क हिसाब से कुंडी खोल लेंगे, बंद कर लेंगे। समुद्र हैं, इसलिए यह नहीं जाना जा सकता कि बड़ी रसे करेंगी, उनका व्यापार कैसे चलेगा, और उनके तोग समझ गए कि एकता में बल है। लेकिन मजबूत हैं, और दरवाजे छोटे हैं। सबको पता है को गिराना पड़ेगा। हालांकि दरवाजे सभी खुल चुके ही खुले रह गए थे। वे एक-दूसरे को देखते ही हमारा दिल भी तुम्हारा, हमारा भी तुम्हारा है। लेकिन को स्वीकार नहीं किया। सबने अपनी-अपनी दीवारों नहार अवश्य चिपका लिए, पर दरवाजा पूरा नहीं हले आप' में भरोसे की भैंस पाड़ा दे कर चली गई।

आतंकवाद की विचारधारा को करना होगा समूल नष्ट



संजीव ठाकुर

में गंभीर आतंकवादी
एक सेना का जवान
इसके अलावा आतंक
यात्रा से लौटते हुए, रि
पर श्रद्धालुओं पर
बरसाई गई बस वे
श्रद्धालुओं की मौत हो
में खालिस्तानी समश
गांधी की मूर्ति को
जिसका अनावरण G
होने जा रहे प्रधानमं
वाले थे। आतंकवाद
बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्त
करके रखा है। अब स
आतंकवादियों को ए
दिया जाए और आतं
को समल नष्ट किय

जम्मू काश्मीर फिर आतंकवाद की ज्वाला से धधक रहा है, कि तु आ, हीरानगर, डोडा तमला हुआ जिसमें शहीद हो गया। अदियों द्वारा धार्मिक सासी नामक स्थान बेतहाशा गोलियां पलटने से 9 गई। उधर इटली कों द्वारा महात्मा बंडित किया गया समिट में शामिल हो गया। मोदी जी करने ने न सिर्फ देश में र पर नाक में दम मय आ गया है कि सिरे से कुचल कवादी विचारधारा जाए। आतंकवाद एक मानसिक विकृति की विचारधारा है, जिसके द्वारा हिंसक कार्यों और गतिविधियों से जनमानस अशांति और भय की स्थापना करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करना होता है। जिससे किसी भी क्षेत्र में आधिपत्य का अधिकार प्राप्त करने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लेकर जनमानस में अशांति का वातावरण निर्मित करने अपने मंसुबे पूरे कर आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक विध्वंस का तांडव मचाना होता है। कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा संचालित मानव विरोधी गतिविधियां ही हैं जो कि समाज के विरुद्ध लट, अपहरण, बम विस्फोट, हत्या जैसे जघन्य अपराधों को जन्म देती है। आतंकवाद मूलतः धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश लिए हुए होता है। भारत में आतंकवाद धार्मिक और राजनीतिक ज्यादा परिलक्षित हुआ है। भारत में कश्मीर, लद्दाख, असम मैं विभिन्न अलगाववादी समूह द्वारा हिंसक अपराधिक कृत्य कर लाएंगे को भयभीत तथा प्रतियन्त करने पर मजबूर करने का कृत्य राजनीतिक अलकायदा, लश्कर मोहम्मद जैसे संगठ भावना से अपराध व में नक्सलवाद ने आंध्र प्रदेश, मध्य प्र और पश्चिम बंगाल परचम फेहरा के मूलतः सामाजिक सरकार के विरोध आदिवासियों के म सरकार चलाने हेतु यह आतंकवादी गु अलग तरीके से 3 प्रयास करते हैं, य वाले इलाकों में जै स्टैड रेल रेल प अपहरण निर्दोष ल बैंक में डकैतिय अराजकता तथा वै काम करते हैं। भार मूल रूप से पश्चिमाली क्षेत्र में प्रतियन्त करने का

आतंकवाद ही है। ए-तैयबा, जैश-ए-नम धार्मिक कट्टरता की गों अंजाम देते हैं। देश छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, देश, झारखण्ड, विहार जन में अपना मौत का खेल रखा है। नक्सलवाद कांतिकारी समूह द्वारा जन में आमजन तथा अपनी समानांतर हेसक घटनाएं की हैं। हिंसा के द्वारा अलग आतंकवाद फैलाने का इज्यादातर भीड़भाड़ से रेलवे स्टेशन बस स्टरियो वायुयानों का गोंगों को बंदी बनाना और समाज में मनस्यता फैलाने का तत में नक्सलवाद तो बंगल के नक्सल है, जो प्रेरण में

धीरे-धीरे फैल कर हिंसक रूप हुए हैं। आतंकवाद केवल भाकर उसका साम्राज्य वैश्विक भी दुर्भायपूण तरीके से फैल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद घटनाओं को जन्म देकर विसद्वावना की मूल कल्पना र भिन्न करने का प्रयास किया के प्रत्येक देश में आतंकवाद किसी रूप में आज मौजूद है। कहीं रंगभेद, कहीं भाषा विराजनीतिक विचारधाराओं में कहीं रंगभेद के कारण, नस्ल आतंकवाद का कारण बनी समस्याएं हथियारों से सुलझानी में अत्यंत हिंसक बन गई हैं। आतंकवाद को वृहद रूप देने एवं प्रौद्योगिकी ने भी बड़ा सा आतंकवादियों, नक्सलवादियों वादियों के लिए रसायनिक, जैविक मानव बम जैसे हथियार उपलब्ध होने से यह अविविधियां और भी गतिगतिका

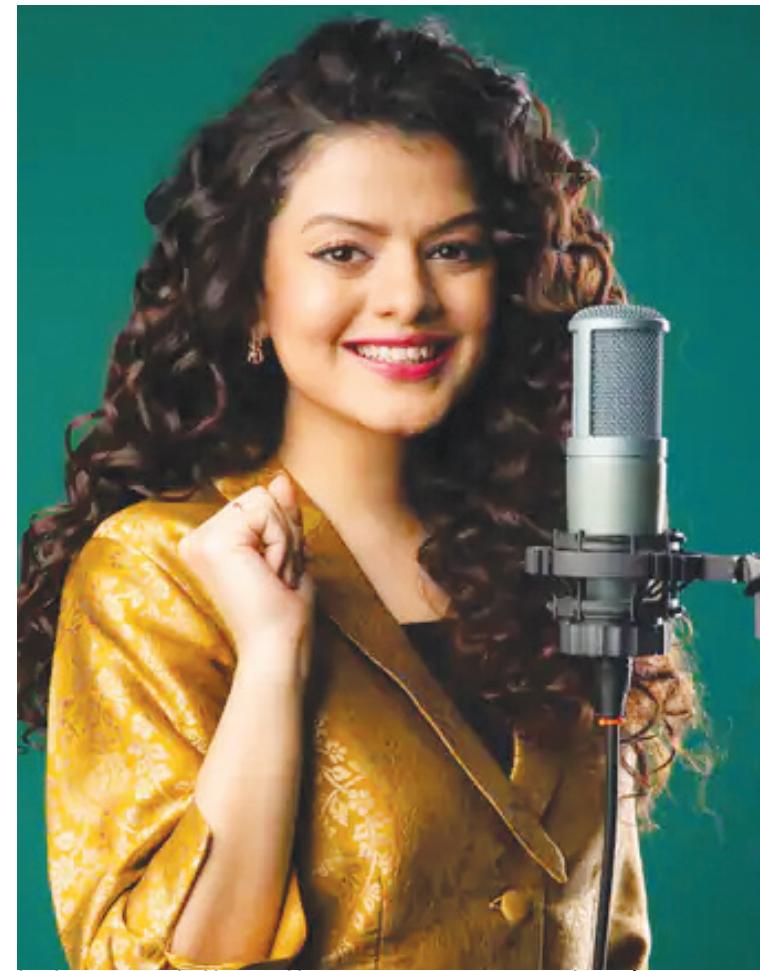
अपनाए भारत में न स्तर पर हुआ है। भारत ने अनेक श्वश शांति नो छिन्न-है। दुनिया किसी न आतंकवाद नेद, कहीं विरोध और भी समस्या है। यह के प्रयास में विज्ञान दिया है, और नस्ल नाभिकीय, आधुनिक आतंकवादी दो गई है। इसके अलावा मीडिया में इंटरनेट उपलब्धता से यह सारी सरकारी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो जाती है। इससे आतंकवादी और ज्यादा खतरनाक सावित हो रहे हैं। विश्व में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर 11 सितंबर 2001 आतंकवादी हमला मानव इतिहास की सबसे क्रूर तम हमला माना जाता है। पाकिस्तान के पेशावर जिले में आर्मी स्कूल में 150 मासूम बच्चों की निर्मम हत्या भी एक क्रूर आतंकवादी घटना है। भारत में 1993 में मार्च में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट इसी तरह दिसंबर 2001 में संसद भवन पर हमलावारणसी बम विस्फोट, अहमदाबाद में बम विस्फोट, 2008 में मुंबई ताज होटल पर हमला, 2016 में पठानकोट एयरबेस हमला, 2017 में अमरनाथ तीर्थयात्रियों हमला, 2019 में पुलवामा हमला आतंकवादी घटनाएं हैं। जिससे मानवीय संवेदनाएं, शांति स्थापना की मूल धारणा की घजियां उड़ जाती हैं। भारत में तो नक्सलवाद भी आतंकवाद का एक तंदूरुकूप ले चका है।

आलोक के साथ सिंगर पलक मुच्छल ने पूरा किया 3000 बच्चों की हार्ट सर्जरी का काम

बॉलीवुड सिंगर पलक मुच्छल अपने गाने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों के लिए खुब चर्चा में रहती है। काफी तम उम्र से ही दूसरे मी मदद के लिए वह आगे रहती रही है। अब जस्तरतमें बच्चों की हार्ट सर्जरी की संख्या 3000 पहुंच गई, जो पलक की मदद से संभव हो पाया है।

बॉलीवुड सिंगर पलक मुच्छल प्लेबैक सिंगर होने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी खब दिलचस्पी रखती है। डाइ साल की उम्र में गाना शुरू करने वालों के पालक ने 3000 बच्चों की जिंदगी बचा चुकी है और इसी के साथ आलोक के लिए प्रार्थना करने वालों को उन्होंने शुक्रिया भी कहा है। पलक ने कहा है कि आलोक की सर्जरी सक्सेसफुल रही और अब वो बिल्कुल ठीक है। यहां बताते चलें कि आलोक के साथ ही गरीब बच्चों की हार्ट सर्जरी करवाने की ये संख्या अब 3000 पर पहुंच गई है। गरीबों के लिए पलक की इस मदद को एक बार पिर से लोगों ने तोराफें की है। यहां ये भी बता दें कि पलक को उनके इस सामाजिक कार्य के लिए उनका नाम 'गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' और 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में दर्ज हो चुका है। इसके अलावा उन्हें सरकार और अन्य संस्थानों ने भी उन्हें अलग-अलग पुस्कारों से सम्मानित किया है।

पलक मुच्छल ने मिर्ची प्लस के साथ बातचीत में कहा था कि वो कई बच्चों का इलाज करवा रही हैं जिन्हें हार्ट सर्जरी की जरूरत है। इसी के साथ वह 3000 संर्जरी पूरी करने के साथ लगाम 400 और बच्चों का इलाज करना चाहती है। उन्होंने इस बातचीत में कहा था, 'ये एक सामने जैसा लगता है कि एक छोटी सी पहल जो एक छोटी सी बच्ची ने शुरू किया था कि वो आज इनमा बड़ा मकसद बन गया है। मेरी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है।'



ये। वे 3,000 बच्चे मेरे लिए मेरे परिवार की जरूरत है।

पलक ने कहा- 'अभी भी 400 से अधिक बच्चे हैं जिनका इलाज करना है।

उन्होंने कहा था, 'अभी भी 400 से अधिक बच्चे हैं जिनका मैं इलाज करना चाहती हूं। आज भी मेरा हर कॉन्सर्ट में कहा था, 'ये एक सामने जैसा लगता है कि एक छोटी सी पहल जो एक छोटी सी बच्ची ने शुरू किया था कि वो आज इनमा बड़ा मकसद बन गया है।' मेरी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है।'

का कॉन्सर्ट कब होगा और हमारी सर्जरी कब होगा और मेरे प्रार्थना करते हूं कि भगवान मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं अपनी इस इच्छा को आगे बढ़ा सकूं।'

सलमान खान ने दिया फिल्मों में पहला मौका

पलक के वर्कफ्रेंड की बात करें तो उनकी कार्यक्रम उन हार्ट सर्जरी को समर्पित होते हैं कि पलक दीदी

ये। बच्चे इंतजार करते हैं कि पलक दीदी

वजह के कि वह सलमान को अपने करियर के शुरुआत की बजाए मानती है। उन्होंने अपने इंटर्व्यू में कहा था कि सलमान खान उन्हें समय-समय पर गाइड किया करते थे उन्हें कि कैसे आगे बढ़ाना है।

सलमान के एनजीओ में मदद के लिए आए 100 बच्चों की सर्जरी

पलक ने बताया था कि उन्होंने सलमान की एनजीओ में मदद के लिए आए 100 बच्चों को सर्जरी करवाया। फिर एक दिन उनका 'एक था टाइगर' में उड़ाने आया और उनकी जिंदगी के लिए बहुत बड़ा ब्रेक था। पलक आज भी मानती है कि यशराज और सलमान खान की फिल्म और करियर के लिए अपनी आवाज देना, बहुत बड़ा डेब्यू है।

'कारिगिल युद्ध' के दोनों उन्होंने दुकानों पर जा-जाकर गाया था गाना

पलक सामाजिक सेवा का ये काम 24 साल से कर रही है। पलक को गरीब बच्चों को मदद करने की ये लगत तब लगी जब उन्होंने ट्रेन के डिव्हिंग में सफाई करने वाले बच्चों को देखा। वो बच्चे अपने कपड़ों से फर्श सफाई कर रहे थे और उनके पास ठंडे में उन्होंने के लिए एगर कपड़े तक नहीं थे। पलक ने अपने एक इंटर्व्यू में बताया था कि 'कारिगिल युद्ध' के दोनों उन्होंने दुकानों पर जा-जाकर गाने गए। दुकानों के सामने जाकर वो 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गाया करती थीं और पिल इससे किसी तरह 25 हजार रुपये तक बड़ी हो गए जो उस समय बड़ी क्रम की थी। फिर उन्होंने छोटे भाई के साथ एक ठेले का मंच बनाकर गाना शुरू किया था। इस तरह 55 हजार रुपये इकट्ठे हुए। ये रकम पलक में एक बच्चे के दिल की सर्जरी में इस्तेमाल की। इस पहली सर्जरी के बाद से लेकर अब आलोक की सर्जरी तक पलक 3000 बच्चों की हार्ट सर्जरी करवा चुकी है।

14 साल फिल्मों से दूर रहने पर क्या बोले फरदीन खान

14 साल तक फिल्म इंडस्ट्री से दूर रहने के बाद फरदीन खान ने संजय लीला भंसाली की वेबसीरीज 'हीरामंडी' से कमबैक किया। एक इंटर्व्यू में उन्होंने इतने लंबे गैप के बारे में बता की और बताया कि वो जानबूझकर फिल्मों से दूर नहीं हुए थे बल्कि इसकी कुछ वजह थीं।

'हीरामंडी' में फिल्मी नवलीन के बाली नोडिंगड का फिल्माइग निभाया है।

उन्होंने कहा, '2009 में मेरे पिल फिल्म खान के बारे में मनीष पाल के दिनों के बारे में मनीष पाल के साथ भी बात की थी। उन्होंने बताया था कि जब पिल की मौत हुई तो उनकी जेब में सिर्फ 30 रुपए थे। फरदीन ने कहा था- एक रात पहले उन्होंने ताश खेला था। मौत के बाद उनकी जेब में सिर्फ 30 रुपए थे जो उन्होंने ताश खेलते बतवत जीता था।'

अंतिम संकार के लिए सलमान

खान के पिला ने दिए थे पैसे

फरदीन के भाई साजिद खान ने

भी इस बात का जिक्र बिंग वॉर्स के

घर में किया था। उन्होंने कहा था- हालांकि इतने ताश खारव थे कि पिला के अंतिम संस्कार के लिए भी पैसे नहीं थे। तब इस बतवत पर सलमान खान के पिला सलीम खान ने मदद की थी।

गई थी, जिसके बाद स्थिति और खराब हो गई।

जिसके बाद स्थिति और खराब हो गई।

लेकिन जिसके बाद से लंबे गैप के बारे में बता की और बताया कि वो जानबूझकर फिल्मों से दूर नहीं हुए थे बल्कि इसकी कुछ वजह थीं।

उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो उन्होंने कहा, 'जब बिना

से दूर नहीं हुए तो

भारत-अमेरिका रिश्ते सबसे खराब दौर की ओर

जी7 में पीएम मोदी और बाइडन की मुलाकात से बनेगी बात?



वॉशिंगटन, 13 जून (एजेंसियां)। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते साल जून में अमेरिकी यात्रा की थी, यानी इस महीने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिकी की राजकीय यात्रा का एक साल पूरा हो गया है। बीते साल का नरेंद्र मोदी का अमेरिकी दौरा काफी सफल माना गया था। राष्ट्रपति जो बाइडन ने उनकी गम्भीरी से आगवानी की थी, साथ ही अमेरिका ने भारत को जेट इंजन की तकनीक ट्रांसफर की योजना को फिर से शुरू करने की पेशकश की थी। इस यात्रा में रणनीतिक और उच्च तकनीक सहायता की एक ऐसी घोषणाएं की गईं, जिसमें प्रधानमंत्री भारत के द्विपक्षीय संबंधों के लिए एक बड़ी सफलता माना गया। हालांकि इस यात्रा के एक साल बाद यानी फिलाडेलिया के समय में दोनों देशों के रितों में एक तनाव दिखता है। कई बाहरी और अंतरिक्ष कारणों से संबंधों की रफतर बीते साल की तरह नहीं दिखती है।

द हिन्दू के लिख के मूलांकिक, भारतीय प्रधानमंत्री मोदी इस साताह इटली में जी-7 आउटटीच शिखर सम्मेलन में एक बार फिर अमेरिकी राष्ट्रपति से मिलेंगे। इससे दोनों देशों के रितों में

सुधार की उम्मीद की जा रही है। भारत-अमेरिका के बीच बेतर संबंधों में दोनों देशों का निहित है। पिछले साल सितंबर में लेकर महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों और बाहरी अंतरिक्ष संबंधों में बदलाव के 23 साल पूरे हुए। पिछले एक दशक में अमेरिका-भारत में विशेष रूप से रणनीतिक विश्वास में वृद्धि देखी गई है, जिसमें सैन्य अभ्यास, समुद्री संचालन पर समन्वय, सैन्य हार्डवेयर की पाइपलाइन में भविष्य की सजिंधारी को लेकर भी भारत के खिलाफ कड़ा खूब दिखाया है। देखा जाए तो पिछले साल प्रधान मंत्री मोदी के अमेरिका दोरे के बाद से ही रितों में गिरावट शुरू हो गई थी। इस साल ये चिंताएँ काफी ज्यादा बढ़ गईं। आम चुनावों में बदलाव के दिनों में हुई, जो दोनों देशों के लिए बहुत अच्छी नहीं रही है। युक्रेन में रूस का युद्ध मतभेद का एक बड़ा क्षेत्र

एयरफोर्स वन से वापस लाए जाएंगे शव, विदेश

राज्य मंत्री बोले- शवों की पहचान करना मुश्किल



मंगाफ, 13 जून (एजेंसियां)। कुवैत के मंगाफ शहर की 6 मिजिला इमारत में बुधवार को आग लगने से 49 मरदों की मौत हो गई। 50 से ज्यादा लोग घायल हैं। भारत के विदेश मंत्रालय के मुताबिक, मरने वालों में करीब 42 भारतीय हैं। एनआईके मूलांकिक, इनमें 12 केरल और 5 तमिलनाडु

से थे। केरल की स्वास्थ्य मंत्री चीनी जांज़ कुवैत के लिए रवाना हो चुकी है। अन्य मृतक पाकिस्तान, फिलीपीन, पिस्व और नेपाल के हैं। हादसे के बाद भारत के विदेश मंत्रालय के मुताबिक, मरने वालों में करीब 42 भारतीय हैं। एनआईके मूलांकिक

गए हैं कि उनकी पहचान नहीं हो पा रही है। कई शब विलिंग की सीढ़ियों पर मिले। भारत का एयरफोर्स वन प्रेस शबों को वापस लाने के लिए तैयार खड़ा है। मंत्री ने कहा, “जैसे ही शवों की पहचान हो जाती है, उनके परिजन को इसकी सूचना दी जाएगी। इसके बाद शब वापस भारत लाए जाएंगे”। कुवैत के समयानुसार यह हादसा बुधवार सुबह करीब 4:30 बजे हुआ। 6 मिजिला इमारत के ग्राउंड फ्लोर के चिकन में लाली आग तो जी से पूरी इमारत में फैल गई। उन्होंने बताया कि इमारत में आग लगने की वजह से कुछ शब इतनी तुरी तरह से जल रही है।

आग लगने की वजह से मची भगदड़ के बीच कई खिलों ने घबराकर विलिंग की खिलोंकों से छलांग लगा दी। कई लोग इमारत के अंदर ही फैसे रह गए और धूंध में दम घुटने से उनकी मौत हो गई।

गए हैं कि उनकी पहचान नहीं हो पा रही है। कई शब विलिंग की सीढ़ियों पर मिले। भारत का एयरफोर्स वन प्रेस शबों को वापस लाने के लिए रेडर अपने फाइटर जेट के लिए रेडर अपने अंटी-फाइटर जेट के लिए रेडर एयरवेंज की तरफ से लक्ष्य की तरफ लगाया है। अब ये लोग इमारत के अंदर ही फैसे रह गए और धूंध में दम घुटने से उनकी मौत हो गई।

बांग्लादेश की नीसेना के सामान भी इसी तरह की चुनौती है। चीन में बनी दो फ्रैंगे में बांग्लादेश को पहचान देते हैं और उनके पासपोर्ट के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश ने चीन से युद्धोपाय, गश्ती नौका और अन्य नौसैनिक जहाज खरीदे हैं और उनमें काफी गड़बड़ीयां सामने आ रही हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदे हैं। ये फायरिंग तक नहीं कर पा रहे हैं। इकानॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के मूलांकिक इन चीनी हथियारों के निमय में ही गड़बड़ी होती है और तकनीकी समस्या आ रही है। बांग्लादेश ने चीन से युद्धोपाय, गश्ती नौका और अन्य नौसैनिक जहाज खरीदे हैं और उनमें काफी गड़बड़ीयां सामने आ रही हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस्टम खरीदते हैं। बांग्लादेश की वायुसेना ने भी चीन

में बने एक-7 फाइटर जेट, के-8 डब्ल्यू एयरक्राफ्ट और स्ट्राईट रेंज के एयरड्रिफ्ट्स सिस

